प्रातः क्लास 24/12/68 ओम शान्ति पिता श्री शिवबाबा याद है ?

बच्चे सिर्फ याद की यात्रा में ही बैठे हुये हैं, बच्चों को यह नशा है हम श्रीमत पर अपना परिस्तान स्थापन कर रहे हैं। इतना उमंग, खुशी रहनी चाहिए। वाह्यात बातें किचड़पट्टी आदि सभी निकल जानी चाहिए। बेहद के बाप को देखते ही उल्लास में आना चाहिए। जितना2 तुम याद की यात्रा में रहेंगे उतना ही इम्प्रुवमेन्ट आती जावेगी। बाप कहते हैं बच्चों के लिये रूहानी यूनिवर्सिटी होनी चाहिए। तुम्हारा नाम ही है वर्ल्ड स्प्रीचुअल यूनिवर्सिटी। तो यूनिवर्सिटी कहां है। बच्चे कहां पढ़े। यूनिवर्सिटी खास स्थापन की जाती है। इसके साथ बड़ी रॉयल यूनिवर्सिटी चाहिए। हास्टल चाहिए। तुम्हारा कितना रायल ख्यालात होनी चाहिए। बाबा को तो दिन रात यही ख्यालात रहता है, कैसे इन्हों को पढ़ाकर ऊँच ते ऊँच इम्तहान पास करावें। जो फिर यह विश्व के मालिक बनने वाले हैं। असल में तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान शुद्ध थी, तो शरीर भी कितना सतोप्रधान सुन्दर था। राजाई भी कितनी ऊंच थी। तुम्हारा हद के संसारिक किचड़पट्टी की बातों में टाइम बहुत वेस्ट होता है। तुम स्टुडन्ट के अन्दर किचड़ पट्टी की ख्यालात नहीं होनी चाहिए। कमेटियां आदि तो बहुत अच्छी2 बनाते हैं, योगबल तो है नहीं। जो भी कमिटियां आदि बनती हैं, गपोड़ा बहुत मारते हैं हम यह करेंगे यह करेंगे। माया भी कहती हम उनको नाक से पकड़ेंगे, कान से पकड़ेंगे। बाप के साथ लव ही नहीं है। कहा जाता है नर चाहत कुछ और है..... तो माया भी कुछ करने नहीं देती है। माया बहुत ठगने वाली है। कान ही काट लेती है। बाप कितना बच्चों को ऊँच बनाते हैं, डायरेक्शन देते हैं, यह यह करो। बाबा बड़ी रायल2 बच्चियाँ भेज देते हैं। कोई2 कहते हैं बाबा हम ट्रेनिंग लिये जावें। मैं कहता हूँ अपना मुंह तो देखो। बाप तो ऐसे ही कहेंगे ना। अपन को देखो हमारे में कितने अवगुण हैं। अच्छे2 महारथीयों को भी माया देखो क्या कर देती है। एकदम लूनपानी कर देती है। ऐसे खारे बच्चे हैं। बाप को कब भी याद नहीं करते। ज्ञान का ज्ञ भी नहीं जानते बाहर का शो बहुत है। इसमें तो बड़ा अन्तर्मुख रहना चाहिए बाप के डायरेक्शन पर। कईयों की तो ऐसी चलन होती है जैसे अनपढ़े जट लोग होते हैं। थोड़ी सी पैसा है तो नशा चढ़ जाता है। यह समझते नहीं अरे हम तो कंगाल हैं। माया समझने नहीं देती माया बड़ी जबरदस्त है। बाबा थोड़ी महिमा करते हैं तो इसमें बड़ा खुश हो जाते हैं। बाबा को तो रात दिन यही ख्यालात होती है युनिवर्सिटी फर्स्ट क्लास होनी चाहिए, जहां अच्छी रीति बच्चियां पढ़ें। तुम जानते हो हम स्वर्ग में जाते हैं तो खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। यहां बाबा कसम2 का डोज़ देते हैं नशा चढ़ाने। पीग का नशा होता है ना। कोई दिवाला निकाला हुआ हो उनको (श)राब पीला दो तो समझेंगे हम बादशाह हैं। फिर नशा पूरा होने से वैसे का वैसे बन जाते हैं। अभी यह तो (है) रूहानी नशा। तुम जानते हो बेहद का बाप, टीचर बन हमको पढ़ाते हैं और डायरेक्शन देते हैं ऐसे2 करो। कोई समय में किसको मिथ्या अहंकार भी आ जाता है। ऐसी2 बातें बनाते हैं जो बात मत पूछो। बाबा समझते हैं यह चल न सकेंगे। अन्दर की बड़ी सफाई चाहिए। आत्मा बहुत अच्छी चाहिए। तुम्हारी लव मैरेज है ना। लवमैरेज में कितना प्यार होता है। यह तो पतियों का पति है। सो भी कितने की लवमैरेज होती है। एक की थोड़े ही होती है। सभी कहते हैं हमारी सगाई तो शिवबाबा साथ हुई है तो हम स्वर्ग में जाय बैठेंगे। खुशी की बात है ना। अन्दर में आना चाहिए ना बाबा हमको कितना श्रृंगारते हैं। शिवबाबा श्रृंगार करते हैं (इन) द्वारा। यह भी राय देते हैं, तुम्हारी बुद्धि में है बाप को याद करते2 हम सतोप्रधान बन जावेंगे। इस नालेज को और कोई जानते ही नहीं। इसमें बड़ा नशा रहता है। अभी अजुन इतना नशा चढ़ता नहीं है। होना है जरूर। गायन भी है अति इन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो। अभी तुम्हारी आत्माएँ कितनी छी छी हैं। जैसे बहुत छी छी कपड़े में बैठी हैं। उन्हों को बाप आकर चेंज करते हैं। रिज्युवीनेट करते हैं। मनुष्य ग्लान्स चेंज कराते हैं

ना। एक तो पहले से ही बन्दर हैं बाकी भी बन्दर की ग्लान्स डालने से पूरे बन्दर बन जाते हैं। खुश कितना होते हैं। तुमको तो अभी बाप मिला बेड़ा ही पार है। समझते हो हम बेहद के बाप के बने हैं। तो अपन को कितना जल्दी सुधारना चाहिए। रात दिन यही खुशी, यही चिन्तन रहे। तुमको मार्शल देखो कौन मिला है वह आयब मार्शल है कितने उनसे डरते हैं। सभी को पकड़ बैठा है। उनमें विल पावर है ना। बाप भी तुम बच्चों को कितना श्रृंगारते हैं–रात दिन यही ख्यालात में रहना होता है। जो जो अच्छी रीत समझते हैं, पहचानते हैं वह तो जैसे उड़ने लग पड़ते हैं। तुम समझते हो बाबा हमारी आत्मा को क्या करते हैं आत्मा हमारी जो बिल्कुल ही डर्टी बन पड़ी है, डर्टी जगह में बैठी है तो तुम अभी संगम पर हो। बाकी वह सभी तो गन्द में पड़े हैं। जैसे किचड़े के किनारे झोपड़ियाँ लगाकर गन्द में बैठे हैं। यह फिर है बेहद की बात। अभी उससे निकलने की शिवबाबा बहुत सहज युक्ति बताते हैं। मीठे2 बच्चों तुम जानते हो इस समय तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों ही पतित हैं। गन्दगी नाली, विषयवैतरणी नदी में पड़े हो। तो तुम अभी निकल आये हो। बाकी जो भी बड़े2 दुनिया के वजीर आदि हैं सभी झुगियां में बैठे हैं। तुमको तो बाप ने बचा लिया। अभी तुम्हारी आत्मा पवित्र हो रही है। तुम्हारी भेंट में सभी की आत्मा डर्टी है। बिल्कुल डर्टीयस्ट है। राजाएं आदि भी बड़े गन्दे बनते हैं। तो एकदम पैसा उड़ा देते हैं। वह तो एकदम किचड़े जगह में पड़े हैं। तुम तो बाप को याद कर पावन बनते हो। बाप आत्माओं से ही बात करते हैं। गन्दी झोपड़ियों से तुमको बाप ने निकाल दिया है। अभी तुम निकल आये हो। जो जो निकलकर आये हैं। ज्ञान की प्रकाष्टा है ना। तुमको बाप मिला तो फिर क्या। यह नशा जब चढ़े तब तुम किसको समझा सको। बाप आया हुआ है बाप हमारी आत्माओं को पवित्र बना देते हैं। आत्मा पवित्र बनने से फिर शरीर भी फर्स्ट क्लास मिलता है। अभी तुम्हारी आत्मा कहां बैठी है? इस झोपड़ी में बैठी हुई है। तमोप्रधान दुनिया है ना। किचड़े के किनारे पर आकर बैठे हो। विचार करो हम कहां से निकले हैं। बाप ने इस गंदी नाली से बैठ निकाली है। आत्मा हमारी अभी स्वच्छ बन जावेगी। रहने लिये भी फर्स्ट क्लास महल मिलेंगे। हमारी आत्मा को बाप श्रृंगार कर स्वर्ग में ले जा रहे हैं। ऐसे2 अन्दर में ख्यालात बच्चों को आनी चाहिए। बाबा कितना नशा चढ़ाते हैं। तुम्हारी आत्मा इतनी ऊंच थी, फिर गिरते2 आकर नीचे वेश्यालय में पड़े हैं। शिवालय में थी तो आत्मा कितनी शुद्ध थी। तो फिर शिवालय में जाने का उपाय करना चाहिए ना। आपस में मिल जल्दी2 करना चाहिए। बाबा को तो वन्डर लगता है। बच्चों को वह दिमाग़ नहीं। बाबा हमको कहां से निकालते हैं। पाण्डव गवर्नमेंट स्थापन करने वाला बाप है। पाण्डव गवर्नमेंट और कौरव गवर्नमेंट की भेंट तो करो। भारत जो हेविन था वो अभी हेल है। आत्मा की बात है। आत्मा पर ही तरस पड़ता है। एकदम तमोप्रधान दुनिया में आकर आत्मा बैठी है। इसलिये बाप को याद करते हैं बाबा हमको वहां ले चलो। यहां बैठे भी तुमको वह ख्यालात होनी चाहिए। इसलिये बाबा कहते हैं बच्चों के लिये फर्स्ट क्लास यूनिवर्सिटी बनाओ। कल्प2 बनते हैं। ख्यालात बड़ी आलीशान होनी चाहिए। अभी वह नशा नहीं चढ़ता है। नशा चढ़ा हुआ हो तो पता नहीं क्या करके दिखावें। युनिवर्सिटी का अर्थ ही नहीं समझते हैं। उस रॉयलिटी के नशे में नहीं जाते। माया दबाये बैठती है। बाबा समझाते हैं अपना नशा मत चढ़ाओ। कमिटियां आदि तो बहुत बनाते हैं; परन्तु पहले अपनी क्वालीफिकेशन को तो देखो। बाबा हरेक की क्वालीफीकेशन मंगावेंगे कैसे पढ़ते हैं, क्या मदद करते हैं। सिर्फ मुंह का पकोड़ा नहीं खाना है। जो कहते हैं वह करना है। गपोड़े नहीं कि यह करेंगे यह करेंगे। कहते हैं यह करेंगे कल मौत आया खत्म हो जावेंगे। सतयुग में तो ऐसे नहीं कहेंगे। वहां कब अकाले मृत्यु होता ही नहीं। वहां है ही सुखधाम। सुखधाम में काल को आने का हुकुम नहीं। राम राज्य और रावणराज्य के अर्थ को भी समझना है। अभी तुम्हारी लड़ाई है ही रावण से। देह अभिमान भी कमाल करता है। देहीअभिमानी हो

आत्मा शुद्ध बन जाती है। तो कैसे बन जाती है। तुम समझते हो ना वहां हमारे कैसे महल बनेंगे। अभी तुम संगम पर आये हो। नम्बरवार सुधर रहे हैं, लायक बन रहे हैं। वह सभी हैं नालायक। नर्कवासी है ना। तुम्हारी आत्मा पतित होने कारण शरीर भी पतित मिला है। अभी मैं आया हूँ तुमको स्वर्गवासी बनाने। याद के साथ दैवी गुण भी चाहिए। मासी का घर थोड़े ही है। माया असुर बना देती है। समझते हैं कि बाबा आया है हमको नर से ना0 बनाने; परन्तु माया का बड़ा गुप्त मुकाबला है। तुम्हारी लड़ाई है ही गुप्त। इसलिये तुमको अननोन वारियर्स कहा जाता है। अननोन वारियर्स कोई होता ही नहीं। तुम्हारा ही नाम है अननोन वारियर्स और तो सभी के नाम रजिस्टरों में हैं ही। तुम्हारे अननोन वारियर्स की निशानी उन्होंने पकड़ी है। तुम कितने गुप्त हो किसको पता नहीं। तुम विश्व पर, विश्व पर विजय पा रहे हो। माया को वश करने लिये तुम बाप को याद करते हो, फिर भी माया भुला देती है। कल्प2 तुम अपना राज्य स्थापन करते हो। तो अननोन वारियर्स तुम हो। सिर्फ़ बाप को याद करते हो। इसमें हाथ–पांव कुछ भी नहीं चलाते हो। याद के लिये युक्तियां भी बाबा बहुत बताते हैं। चलते–फिरते तुम याद की यात्रा करो। पढ़ाई भी करो। अभी तुम समझते हो हम क्या थे, क्या बन गये, अभी फिर बाबा हमको क्या बनाते हैं। कितना सहज युक्ति बताते हैं। कहां भी रहते याद करो तो जंक उतर जाये। कल्प2 यह युक्ति रचते रहते हैं। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो, तो सतोप्रधान बन जावेंगे और कोई भी बन्धन नहीं, लेट्रीन में जाओ तो भी अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। तो मैल उतर जाये। आत्मा को कोई तिलक आदि नहीं लगाना है। यह सभी भक्ति मार्ग की निशानी है। इस ज्ञान मार्ग में कोई दरकार नहीं। पानी का खर्चा नहीं। घर बैठे याद करते रहो। कितना सहज है। वह बाबा हमारा बाबा भी है, टीचर भी है, गुरू भी है। पहले बाप की याद, फिर टीचर की याद, फिर गुरू की याद। कायदे ऐसे कहते हैं। टीचर को तो जरूर याद करेंगे। उनसे पढ़ाई का वरसा मिलता है। फिर वानप्रस्थ अवस्था में गुरू मिलता है। यह बाप तो सभी मुटा दे देते हैं। बाप तुमको 21 जन्मों के लिए राजाई का मुटा दे देते हैं। शादी में कन्या को दहेज गुप्त देते हैं ना। शो करने की दरकार नहीं। कहा जाता है गुप्त दान। शिवबाबा भी गुप्त है ना। इसमें अहंकार आदि की कोई बात नहीं। कोई2 को अहंकार रहता है। यह सभी गुप्त है। बाप तुमको विश्व की बादशाही दहेज में देते हैं। कितना गुप्त तुम्हारा श्रृंगार हो रहा है। कितना बड़ा दहेज मिलता है। बाप कैसे युक्ति से देते हैं किसको पता नहीं पड़ता। यहां तुम बेगर हो दूसरे जन्म में गोल्डेन स्पून इन माउथ होगा। तुम गोल्डेन दुनिया में जाते हो। वहां सभी कुछ सोने का होगा। साहुकारों के महलों में हीरे जड़ित होंगे। फर्क तो जरूर रहेगा। यह भी अभी तुम समझते हो। मनुष्य तो उल्लू मिसल उल्टे लटके हुये हैं। माया लटकाये देती है। अभी बाप आया है तो बच्चों में कितना उल्लास होना चाहिए; परंतु माया भुला देती है। बाप की डायरेक्शन है या ब्रह्मा की, भाई की है कि बाप की इसमें बहुत मूंझते हैं। बाप कहते हैं अच्छा वा बुरा हो तुम बाप के डायरेक्शन ही समझो। उनपर चलना पड़े इनकी कोई भूल भी हो जावेंगे तो अभूल करा देंगे। इनमें ताकत तो है ना। तुम देखते हो यह कैसे चलते हैं। इन(के) सिर पर कौन बैठे हैं। एकदम बाजू में बैठे हैं। गुरू लोग बाजू में बिठाकर समझाते हैं ना। तो भी मेहनत इनको करनी पड़ती है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में पुरु0 करना पड़ता है। बाप कहते हैं मुझे याद कर भोजन बनाओ। शिवबाबा की याद का भोजन कब किसको मिलता नहीं। अभी तक भोजन का गायन है। महिमा गाते हैं; परन्तु समझते नहीं। वे इतना कहेंगे रिलीजियस माइन्टेड है। सतयुग में भक्ति होती नहीं। कहते हैं ज्ञान–भक्ति–वैराग्य। कितने फर्स्टक्लास अक्षर हैं। ज्ञान दिन, भक्ति रात। फिर रात से वैराग्य होता है फिर दिन में जाते हैं। अभी तुमको धक्का ही खाना पड़ता है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। वह लव मैरेज करते हैं गटर में डाल देते हैं। मैं तुम्हारा बेहद का बाप हूँ। बीज को और चक्र को याद करो। अभी कलियुग का अन्त है सतयुग आना है। संगम पर तुम गुल2 बनते हो। आत्मा सतोप्र0 बन जावेगी तो रहने का महल भी सतो0 बन जावेंगे दुनिया ही नई बन जावेगी। ओम।